प्रवासी कथाकार दिव्या माथुर के कथा-साहित्य में संवेदना और शिल्प (ब्रिटेन के संदर्भ में)

हिन्दी में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्रा
नीतू

शोध निर्देशिका
प्रो0 शर्मिला सक्सेना

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा - 282005

2024

"प्रवासी कथाकार दिव्या माथुर के कथा-साहित्य में संवेदना और शिल्प "

शोध परिचयप

मानव जीवन सृष्टि के विकास की चरम परिणति है | सृष्टि के निर्माण से ही मानव का निरंतर विकास हो रहा है| मनुष्य के जीवन का यह विकास एकमार्गी न होकर बहुमार्गी है | वह शिक्षा, संस्कृति, समाज, धर्म, अर्थ इत्यादि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर है | साहित्य मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है | साहित्य, समाज, मानव एवं मानव की अनुभूतियों का अविछिन्न संबंध है और साहित्यकार इन अनुभूतियों को प्रकट करता है| इसी विकास के क्रम के कारण कथा, लोककथा, कहानी, नाटक, यात्रा-वृतांत जैसी अनेक साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ है | साहित्य के सृजन का एकमात्र उद्देश्य मनोरंजन नहीं होता वरन् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय की स्थापना भी साहित्यकार का उद्देश्य है | साहित्य में साहित्यकार अपने अनुभवों एवं ज्ञान के सम्मिश्रण के द्वारा तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियों एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है |

मनुष्य एक संवेदनात्मक प्राणी है | सम्पूर्ण वाङ्गमय चराचर जगत की संवेदनाओ का पुंज हैं| जन्म से मृत्यु तक की संपूर्ण अवधि के दौरान वह विभिन्न प्रकार के संवेगों एवं संवेदनाओं के मध्य अपना जीवन व्यतीत करता है| संवेदना शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'सम्'+'वेदना' | वर्धा शब्दकोश के अनुसार "मन में उद्भूत होने वाला बोध या अनुभव |" जलोटा के अनुसार, "संवेदना शब्द का प्रयोग सब चेतना अनुभवों में सबसे सरलतम का वर्णन करने के लिए किया जाता है|" अतः संवेदना उस भाव को कहा जाता है जो किसी अन्य जीव या परिस्थिति को देखकर मानव मन में उद्भूत होती है| देश व काल के प्रभाववश हिन्दी साहित्य एवं विश्व साहित्य में तत्कालीन समाज तथा राष्ट्र की सामयिक-समसामयिक, सम एवं विषम परिस्थितियों को विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है| इन विधाओं में नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण इत्यादि को किया जाता है | चयनित विषय कथा साहित्य में मुख्यतः कहानी एवं उपन्यास को सम्मिलित किया गया है|

कथा साहित्य में किसी घटनाक्रम के संदर्भ में ईर्ष्या, प्रेम, रहस्य, रोमांच, जिज्ञासा, और मनोरंजन संबंधी मनोभावों का

प्रस्फुटन होता है| कहानी का संबंध सृष्टि के प्रारंभ से ही जोड़ा जाता है । मानव ने जिस दिन से भाषा द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति की होगी संभव है उसी दिन से उसने कहना और सुनना आरंभ कर दिया होगा।

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार, " गल्प (कहानी) एक ऐसी गद्य रचना है जो जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रस्तुत करती है ।"

एडगर एलन पो के अनुसार, "कहानी एक ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा होता है कि एक घण्टे की बैठक में पढ़ा जा सकता है और जो पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया होता है ।"

इसी परंपरा में हिन्दी कहानी साहित्य का विकास पूर्व प्रेमचन्द युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, इत्यादि के रूप में हुआ है | हिन्दी साहित्य के स्थापित लेखकों में प्रेमचंद, प्रसाद, सुदर्शन, गुलेरी, निर्मल वर्मा, गीताश्री इत्यादि को शामिल किया जाता है| भारतीय प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत (मॉरीशस), तेजेंद्र शर्मा (ब्रिटेन), उषा प्रियंवदा (यू.एस.ए), दिव्या माथुर (ब्रिटेन), पुष्पा सक्सेना(यू.एस.ए), इत्यादि ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने प्रवास में रहकर कहानी विधा एवं अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त किया है| इनके साहित्य में परिवर्तित जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति के साथ देशी एवं विदेशी संस्कृति के मिलन से उत्पन्न हुए मनोभावों की अभिव्यक्ति है|

उपन्यास गद्य विधा है | उपन्यास के माध्यम से हम जीवन का एक चित्र और युग की स्पष्ट छाप को अनुभव कर सकते हैं| इसमें मानव मन को परिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है| इसके माध्यम से जीवन को विभिन्न संदर्भ में विवेचित एवं विश्लेषित किया जा रहा है, परिणाम स्वरूप उपन्यास के विभिन्न स्वरूपों का विकास हुआ है यथा ऐतिहासिक, सामाजिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिवादी एवं प्रयोगवादी उपन्यास लिखे गए हैं|

उपन्यास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'उप'+'न्यास' जिसका अर्थ है 'समीप रखना' अर्थात मानव जीवन के समीप रखना| उपन्यास में मानव जीवन अपेक्षाकृत समीपता से चित्रित किया जाता है अन्य विधाओं में नहीं |

बेवस्टर डिक्शनरी के अनुसार, "उपन्यास एक ऐसी कल्पित गद्य रचना है जिसके विषय की सीमा असीम हो जिसके शिल्प

कौशल में विविधता हो और जिसमें एक या अधिक कथा हो|"

हजारी प्रसाद द्विवेदी, के अनुसार, "उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य है और उसमें मानव जीवन का चित्रण उपस्थित किया जाता है और वह मनुष्य के जीवन और चरित्र की व्याख्या करता है और उनका उद्घाटन करता है |"

श्यामसुंदर दास के अनुसार, " उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है|"

मानव एक गतिशील प्राणी है | प्राचीन काल से ही वह अपनी उन्नति एवं विकास के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता आया है | यह आवागमन एवं स्थानान्तरण की प्रक्रिया अनवरत चल रही है, जिससे प्रवास, प्रवासी, डायसपोरा जैसे शब्दों का जन्म हुआ है | मनुष्य उत्तम जीवन शैली एवं महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्णता के लिए इस दुनिया की थाह लेने को आतुर है | यह आवागमन या प्रवास जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है | साहित्य भी मनुष्य के जीवन का प्रमुख अंग है, जो प्रवास के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है | प्रवास का यह रूप कभी स्थायी होता है, कभी अस्थायी होता है | विश्व में रहने वाले अनेकानेक भारतवंशी इसी बात के प्रमाण हैं | प्रवासी शब्द का प्रयोग मात्र साहित्यकारों के लिए ही नहीं किया जाता अपितु इसमें उन सभी भारतीयों को सम्मिलित किया जाता है , जो व्यापार, अनुसंधान, शिक्षा, सामाजिक-जाग्रति, सभ्यता एवं सांस्कृतिक आकर्षण के कारण विदेश में जाकर बस गए हैं | इनकी अपने-अपने क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां हैं | दिव्या माथुर ने भी ब्रिटेन में रहकर हिन्दी के विकास एवं गति के लिए योगदान दिया है और निरंतर प्रयासरत हैं |

प्रवास करने की प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य को प्रवासी की संज्ञा दी गई है | प्रवास मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है | प्रवास शब्द की व्युत्पति 'प्र' उपसर्ग में 'वस्' धातु में 'इण' प्रत्यय के योग से हुई है जिसका अर्थ है – 'प्रवास करने वाला |'

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाशित शब्दकोश में भी (प्र+वस्+धत्र) के रूपvमें हुई जिसका अर्थ है अपने जन्म स्थान को छोड़कर विदेश में जाकर किया जाने वाला वास |

फादर कामिल बुल्के ने अपने शब्दकोश में प्रवास शब्द के लिए इमिग्रेशन शब्द का प्रयोग किया है |

पी. एच. रोसी के अनुसार,"यदि कोई व्यक्ति किसी नए स्थान में जाने की इच्छा रखता है तो प्रवासी कहा जाता है । "

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार, "एक व्यक्ति जो काम या बेहतर रहने की स्थिति खोजने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है ।"

प्रवास भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया है । प्रवासी शब्द एक विस्तृत एवं व्यापक अर्थ रखता है | यह हमारे देश में उन सभी भारतीयों का बोध कराता है जो विदेशी संस्कृति से आकर्षित होकर उच्च् व्यापार, अनुसंधान, शिक्षा, शांति एवं जीवन को विकसित बनाने के लिए विदेशों में जाकर जीवन यापन कर रहे हैं | प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 2 करोड़ से ज्यादा है | इनमें 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा भारतीय वहाँ की औसत जनसंख्या का बोध कराते हैं एवं वहाँ की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक दशा को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | प्रवासी लोगों ने पाश्चात्य संस्कृति को अंगीकार कर लिया | साथ ही साथ अपने देश और अपनी मातृभूमि से जुड़े संस्कारों को वहाँ पुनर्स्थापित किया हैं |

विदेशों में रहने वाले भारतीयों के द्वारा किया गया सृजनात्मक लेखन प्रवासी साहित्य के रूप में परिभाषित किया जाता है | प्रवासी लेखक अपने संस्कारों के साथ प्रवासगत संवेंदनाओं को अभिव्यक्त करता है| प्रवासी साहित्य का अभिप्राय प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य है। डॉ. कमल किशोर गोयंका के अनुसार “हिंदी के प्रवासी साहित्य का रूप-रंग उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भाव बोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत तथा स्वदेश परदेश की द्वंद पर टिकी है तथा बार-बार हिंदू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।”

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रवासी रूप का अध्ययन करें तो पाते हैं कि विश्व के विभिन्न देशों में एक बुद्धिजीवी वर्ग ऐसा है, जो हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना योगदान दे रहा है | अमेरिका, ब्रिटेन, फिजी, सूरीनाम, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, इत्यादि ऐसे देश हैं जहां पर हिन्दी का विकास भारत के प्रवासी साहित्यकारों द्वारा किया जा रहा हैं | ब्रिटेन में तेजेंद्र शर्मा, दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, भारतेन्दु विमल, शैल अग्रवाल, मोहन राणा इत्यादि साहित्यकार अपनी लेखनी

के द्वारा प्रवासी जीवन की संवेदनाओं को व्यक्त कर रहें हैं |

दिव्या माथुर भारतीय उच्चायोग के सांस्कृतिक विभाग नेहरू केंद्र में कार्यरत रह चुकीं हैं | प्रवासी साहित्यकारों के लेखन में विदेशी जमीन पर उभरते अस्मिता के प्रश्न, स्त्री-विमर्श, नस्लवाद, रंगभेद, सांस्कृतिक मतभेद , स्त्री-पुरुष संबंधो की बदलती छवियों का वर्णन है | दिव्या माथुर के साहित्य में भी स्त्री विमर्श, सांस्कृतिक द्वन्द, अस्तित्व की खोज, विदेशी परिवेश में मानव मन की बदलती मनोवृतियाँ, जैसे संवेदनीय तत्वों को भूमि मिली है | विदेशी सरजमीं पर बसने के बाद स्वयं को अधिकाधिक विकसित एवं परिपक्व बनाने के लोभ में अपने मूल स्वभाव को खोते हुए अथवा अपने मूल को ढूढते हुए भारतीय मानव का चित्र हमें दृष्टिगत हैं | प्रवास के उपरांत मनुष्य की परिवर्तित मनोस्थिति उसे एक जीता जागता यंत्र बना देती है, जिसके जीवन का एकमात्र ध्येय (मोर ओर मोर) अधिक से अधिक प्रभावशाली सुविधासम्पन्न जीवन जीना है | दिव्या माथुर के साहित्य में भी हमें ऐसे तत्त्व मिलतें है जो मानव को सरल सहज एवं परोपकारी जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं | उनकी कहानियां विश्वबन्धुत्व, एवं मानवतावाद का संदेश देती हैं| प्रस्तुत शोध प्रवासी जीवन की इन्ही समस्याओं, विद्रूपताओं एवं बदलती परिस्थितियों को व्याख्यायित करता है |

शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन

पठन-पाठन , अध्ययन-अध्यापन साहित्य से जुड़े व्यक्ति की सहज प्रवृत्ति होती है | इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप साहित्य एवं समाज में उच्च-कोटि के शोध कार्यों एवं तकनीकी विकास को बढ़ावा मिला है | प्रस्तुत शोध विषय के चयन की प्रेरणा मुझे प्रवासी साहित्य के अध्ययन से ही प्राप्त हुई है| दिव्या माथुर ब्रिटेन के साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं उनकी फंतासी शैली में लिखी गई कहानी '2050' ने मुझे उनके साहित्य के प्रति आकर्षित किया | दिव्या माथुर के छः कहानी संग्रह, चार उपन्यास, आठ कविता संग्रह, अनुवादित एवं संपादित पुस्तकें हैं | वर्तमान में भी उनकी लेखनी निरंतर क्रियाशील है । वे वातायन की संस्थापक, आशा फाउण्डेशन संस्थापक सदस्य, लंदन में आयोजित हिन्दी सम्मेलन की आयोजक रहीं हैं | दिव्या माथुर को हरिवंशराय बच्चन पुरस्कार, कथा यू. के. का परमानन्द पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है | प्रस्तुत शोध विषय के चयन में मेरी शोध निर्देशिका प्रो0 शर्मिला सक्सेना ने मेरी सहायता की है | मैंने अपने शोध से सबंधित

सामग्री के संकलन हेतु निम्न विश्वविद्यालय में जाकर अध्ययन किया |

1. केन्द्रीय पुस्तकालय, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनीवर्सिटी) दयालबाग़, दयालबाग़ आगरा |

2 केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली |

3. केन्द्रीय पुस्तकालय, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली |

4. केन्द्रीय पुस्तकालय, डॉ0 भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा |

5. केन्द्रीय पुस्तकालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा |

इसके अतिरिक मैनें शोध हेतु सामग्री का चयन दिल्ली पुस्तक मेला, विभिन्न ऑनलाइन बेवसाइट एवं दिव्या माथुर जी की सहायता से किया है |

शोध विषय का उद्देश्य

कार्य कारण संबंध या प्रयोजन के निमित्त ही किसी कार्य की कल्पना, परिकल्पना एवं सृजन किया जाता है | मानव की जिज्ञासा ही उसे ऐसे अनेक शोध कार्यों के लिए प्रेरित करती है | साहित्य समाज का प्रतिबिंब है समाज में घटने वाली घटनाओं को साहित्यकार अपने अनुभव के सम्मिश्रण के साथ प्रस्तुत करता है | प्रवासी जीवन जीने वाले साहित्यकारों पर भी यही प्रवृत्ति लागू होती है | लंदन (ब्रिटेन) में निवास करने वाली साहित्यकार दिव्या माथुर का साहित्य प्रवासी जीवन की विभिन्न विशेषताओं से प्रभावित है | दिव्या माथुर के साहित्य में नस्लवाद, रंगभेद, बेरोजगारी, नैतिकता, प्रवास में बदलते भारतीय मूल्यों का चित्रण मार्मिक अनुभूति के साथ वर्णन हुआ है, जिनको पढ़ने के बाद पाठक प्रवासी व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मानसिक स्थितियों से परिचित होता है | इस अनुसंधान के माध्यम से ब्रिटेन में बसे प्रवासी साहित्यकारों की संवेदनाओं को उजागर करने का प्रयत्न किया जाएगा | साथ ही प्रवास करने के उपरांत दो देशों की संस्कृतियों का मिलन किस प्रकार नई संवेदनाओं को जन्म देता है | इस तथ्य पर भी ध्यान दिया जाएगा। प्रस्तुत शोध के माध्यम से उपरोक्त संवेदनाओं और मूल्यों को समाज एवं साहित्य के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे लोग ब्रिटेन की सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों

से परिचित हो सकेंगे। शोध के क्षेत्र में यह अवदान समाज के लिए उपयोगी होगा ऐसी मेरी कामना है।

शोध विषय का महत्त्व

दिव्या माथुर की कृतियों में प्रवासी जीवन के यथार्थबोध और सामाजिक बोध को कविता, कहानी, उपन्यास जैसी साहित्य की विभिन्न विधाओं के रूप में अभिव्यक्त किया है | जिस प्रकार सागर की गहराई एवं व्यापकता का अनुमान लगाना असंभव है, उसी प्रकार एक लेखक या साहित्यकार की अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं लेखन का मापन दुर्लभ कार्य है , किन्तु फिर भी एक पाठक या शोधार्थी अपनी क्षमता के अनुसार लेखक या साहित्यकार के साहित्य की अनुभूति मे डूबने की कोशिश करता है | इस शोध के माध्यम से दिव्या माथुर के कथा-साहित्य के अध्ययन के द्वारा प्रवासी जीवन जीने वाले भारतीय एवं अभारतीय लोगों की अनुभूतियों का विश्लेषण एवं समालोचन प्रस्तुत किया जाएगा | इन अनुभूतियों में वे सभी अनुभूतियाँ शामिल हैं, जिनको एक प्रवासी व्यक्ति भोगता एवं उनसे जूझता है | इस वर्णन के द्वारा साहित्य एवं समाज को प्रवासी जीवन की वास्तविकता का बोध हो सकेगा | यह शोध ब्रिटेन में घटने वाली विभिन्न नैतिक, अनैतिक मानवीय घटनाओं की अनुभूतिगत मान्यताओं को उकेरने का प्रयास करेगा | विदेश में रहकर मानव मन में पाई जाने वाली छटपटाहट, द्वन्दात्मकता, उबाऊपन, अकेलापन जैसे मानव मनोविकारों को शोध के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाएगा |

अनुसंधान पद्धति

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है उसके मन में पाई जाने वाली जिज्ञासा उसे आविष्कारक बनाती है | यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसकी तृप्ति हेतु मनुष्य श्रम, लगन और निष्ठा के साथ प्रयत्नशील रहता है और अपने अथक प्रयासों के द्वारा नित्य नये-नये अनुसंधान करता रहता है | अनुसंधान एक अनवरत प्रक्रिया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील होती है | साहित्य के क्षेत्र में भी यह अनुसंधान मानव मन की कोमल भावनाओं को तुष्ट एवं पुष्ट करता है | प्रस्तुत शोध विषय के लिए वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विवरणात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया जाएगा |

पूर्व में किए गए शोध कार्य

किसी शोध विषय के चयन के पूर्व यह ध्यान रखना अति आवश्यक होता कि चयनित शोध विषय पर पूर्व में कितना कार्य

हो चुका है | विभिन्न ई-पुस्तकालय एवं पुस्तकालयों में अध्ययन करने के उपरांत यह ज्ञात हुआ है कि **गुरु नानक विश्वविद्यालय** की सपना सैनी द्वारा कहानी संग्रह '**मेड इन इंडिया**' पर एम-फिल का लघु शोधप्रबंध तैयार किया गया है| प्रीत अरोड़ा और दलजीत कौर द्वारा '**दिव्या माथुर की साहित्यिक उपलब्धियां**' नामक स्नाकोत्तर शोध किए जा चुके हैं | प्रवासी कथाकार दिव्या माथुर के कथा-साहित्य पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं गया है। अतः मेरे द्वारा चयनित विषय **" प्रवासी कथाकार दिव्या माथुर के कथा-साहित्य में संवेदना और शिल्प "** पूर्णतः नवीन एवं मौलिक होगा | अतः विद्वान् इस विषय पर सहर्ष अपनी अनुमति प्रदान कर मुझे अनुगृहीत करें |

"प्रवासी कथाकार दिव्या माथुर के कथा-साहित्य में संवेदना और शिल्प "

शोध की परिव्याप्ति-

प्रथम अध्याय : प्रवासी जीवन अवधारणा एवं स्वरूप

1.1.1 प्रवास शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ एवं परिभाषा

1.1.2 प्रवास के कारक

1.1.3 प्रवास के विभिन्न स्वरूप

1.1.4 प्रवासी जीवन का संक्षिप्त इतिहास (ब्रिटेन के संदर्भ में)

1.1.5 प्रवासी भारतीयों के लिए भारत सरकार की नीति

1.2.1 प्रवासी कथा साहित्य का वैचारिक परिवेश

1.2.2 ब्रिटेन में प्रवासी कथा साहित्य

1.2.3 दिव्या माथुर का व्यक्तित्व जीवन परिचय, कार्यक्षेत्र, पुरस्कार एवं सम्मान इत्यादि

1.2.4 कृत्तित्व

1.2.5 परिवेश: सामाजिक, आर्थिक तथा साहित्यिक

द्वितीय अध्याय : दिव्या माथुर की कहानियों में व्यक्त संवेदना

2.1.1 संवेदना का अर्थ, अवधारणा एवं स्वरूप

2.1.2 सामाजिक संवेदना

2.1.3 सांस्कृतिक संवेदना

2.1.4 आर्थिक संवेदना

2.1.5 नारी संवेदना

2.1.6 पुरुष-विषयक संवेदना

2.1.7 मनोवैज्ञानिक संवेदना

2.1.8 अन्य

2.2.1 दिव्या माथुर की कहानियों में चरित्र-चित्रण

तृतीय अध्याय : दिव्या माथुर के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना

3.1.1 सामाजिक संवेदना

3.1.2 आर्थिक संवेदना

3.1.3 सांस्कृतिक संवेदना

3.1.4 नारी संवेदना

3.1.5 पुरुष – विषयक संवेदना

3.1.6 मनोवैज्ञानिक संवेदना

3.1.7 अन्य

3.2.1 दिव्या माथुर के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण

चतुर्थ अध्याय दिव्या : दिव्या माथुर के कथा साहित्य में भाषा एवं शिल्प

4.1.1. दिव्या माथुर के कहानी साहित्य में भाषा एवं शिल्प

4.1.2 भाषा-शैली

4.1.3 शिल्प-विधान

4.2.2. दिव्या माथुर के उपन्यास साहित्य में भाषा एवं शिल्प

4.2.1 भाषा-शैली

4.2.2. शिल्प-विधान

पंचम अध्याय : ब्रिटेन के समकालीन प्रमुख कथाकार और दिव्या माथुर

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएं

बेवपत्रिका

कोश

आधार ग्रंथ

कहानी संग्रह

1. आक्रोश, दिव्या माथुर, 2000 हिन्दी बुक सेंटर दिल्ली ।

2. मेड इन इंडिया, दिव्या माथुर, प्रथम संस्करण, 2013 हिन्दी बुक सेंटर दिल्ली ।

3. हिंदी@स्वर्ग.इन, दिव्या माथुर, प्रथम संस्करण, 2013 सस्ता साहित्य मण्डल

4. कोरोना चिल्ला, दिव्या माथुर, प्रथम संस्करण, 2021, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा ।

5. पंगा एवं अन्य कहानियां दिव्या माथुर, मेधा बुक्स ।

6. 2050 एवं अन्य कहानियां, दिव्या माथुर, डायमंड पाउकेत बुक्स ।

उपन्यास

1. तिलिस्म, दिव्या माथुर, प्रथम संस्करण, 2023 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ।

2. बिन्नी बुआ का बिल्ला, दिव्या माथुर, बनिका प्रकाशन ।

3. शाम भर बातें, दिव्या माथुर, 2022 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ।

4. डैड,मॉम और मैं, दिव्या माथुर |

सहायक ग्रंथ

1. कहानी की रचना प्रक्रिया, परमानन्द श्रीवास्तव, 2012 लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज |

2. राजेन्द्र यादव का कथा साहित्य: यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य, डॉ हरिशंकर, 1999, लोकालोक प्रकाशन, साहिबाबाद गाजियाबाद |

3. साठोतरी हिन्दी कहानियों में पुरुष-चरित्र, डॉ दीपा हावगीराज मेलारे,2001, विकास प्रकाशन, कानपुर |

4. हिन्दी कहानी का इतिहास भाग 3, गोपालराय, 2016, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |

5. साठोत्तरी कहानी में मानव मूल्य, डॉ विनीत अरोरा,1999, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली |

6. प्रवास में पहली कहानी, उषा वर्मा, 2008, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

7. इक सफर साथ-साथ, दिव्या माथुर, 2018, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

8. प्रवासी लेखन नयी जमीन नया आसमां, अनिल जोशी, 2018. वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

9. इत्तर प्रवासी महिला कथा कारों की कहानियां, डॉ सुधा ओम ढींगरा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली |

10. हिन्दी का गद्ध साहित्य का इतिहास, डॉ रामचंद्र तिवारी, 2014, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली |

11. हिन्दी कहानी का रचनशास्त्र, धनंजय वर्मा, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली |

12. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास – बदलता व्यक्ति ममता, 1999, नई दिल्ली |

13. भारतीय और प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य वर्तमान परिदृश्य, डॉ मनप्रीत कौर, अनभै प्रकाशन मुंबई |

14. नई सदी कथा साहित्य, पंकज सुबीर 2015, शिवना प्रकाशन सीहोर मध्य प्रदेश |

15. बातें मुलाकातें, डॉ प्रीत अरोरा, 2014, सुमेधा बुक प्रकाशन, नई दिल्ली ।

16. परंपरा, सृजन और उपन्यास, विनोद तिवारी लोकभारती प्रकाशन

पत्र-पत्रिका, बेव-पत्रिका एवं कोश

प्रवासी साहित्य

नया ज्ञानोदय

कथांतर

वर्तमान साहित्य

वाङ्ग्मय

साहित्य कुंज

गर्भनाल

हिन्दी समय

भारत दर्शन

प्रिटिंगरिया

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश, 1989, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ऑक्सफोर्ड ।

हिंदी साहित्य कोश,1958, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी ।

अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश, 1974, कैथलिक प्रेस रांची ।

हिंदी साहित्य शब्दकोश, धर्मवीर भारती ।